shiv tandav stotram | शिव तांडव स्तोत्र

जटाकटाहसंभ्रमभ्रमन्निलिम्प निर्झरी विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनि ।

बगद्धगद्धज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके किशोचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षण मम । । १ । ।

जटाटवरगलज्जलप्रवाहपावितस्थ ले गलेऽवलम्ब्यलम्बितां भुजंगतुंगमालिकाम् ।

डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं चकारचंडतांडवं तनोतु शिवः शिवम्।।२।।

धराधरेन्द्रनंदिनी 'विलासबन्धुबन्धुर स्फुरद्दिगन्तसंतति प्रमोदमानमानसे ।

कृपाकटा क्षधोरणीनिरुद्धर्धर परापदिक्कचिद्दगम्बरे मनोविनोदमेतु वस्तुनि । ।।३।।

जटाभुजंगपिंगलस्फुरत्फणाममणि प्रभाकदम्बकुंकुमद्रवप्रलिप्तदिग्व धूमुखे नः । । ५ ।।

मदान्धसिंधुरस्फुत्त्वगुत्तरीयमेदुरे मनोविनोदमद्भुतं विभर्तु भूतभर्तरि ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुल भा
निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम् ।

सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं महाकपालिसम्पदेशिरोजटालमस्तु

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर प्रसूनधूलिधोरणी विधूसराङ्घ्रि पीठभूः ।

भुजंगराजमालया निबद्ध जटाजूटकः श्रियैचिराय जायताञ्चकोरबन्धु शेखरः । । ६

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धज्ज्वलद्ध नञ्जयाधरीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ।

धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक प्रकल्पनैकशिल्पिनित्रिलोचने रतिर्मम् ।।७।।

नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुर त्कुहू निशीथिनीतमः प्रबन्धकन्धरः

निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतकुतिसुन्दरः कला निधानबन्धुरः श्रियंजगधुरन्धरः । । ८ । ।

प्रफुल्लनीलपंकज पञ्चकालिमप्रभावलम्बिकण्ठक न्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम् | स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं
मखच्छिदं गजच्छिदान्धकाच्छिदंमनन्तकच्छि दंमन्तकच्छिदं भजे ।। ९ ।।

अखर्वसर्वमलाकलाकदम्बमञ्जरी रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम् ।

स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्त कंगजान्तकान्धकन्तमनन्त कान्तकं भजे ।। १० ।।

जयत्यदनिविभ्रमस्फुरदभु जंगम श्वसद्विनिर्गमक्रमस्फुरत्करालभाल हव्यवाट् ।
धिमिन्धिमिन्धिमिन्ध्वनंमृदंगतुंगमं गलध्वनिक्रमप्रवर्तितंप्रचण्डताण्ड वः । । ११ । ।

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजामौक्तिकस्र जोर्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्ष योः ।

तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिव भजाम्यहम् ।। १२॥

कदानिलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन् विन्मुक्तदुर्मतिः सदा शिरस्थमञ्जलिं बहन ।

विमुक्तलोललोचनो ललामभाललग्नकः शिवेतिमन्त्रमुच्चरन्सदासुखी भवाम्यहम् ॥ १३ ।।

निलिम्पनाथनागरीकदम्बमौलिमल्लिका निगुम्फनिर्भरक्षरन्मघृष्णिकामनोहरः ।

तनोतुनो मनोमुदं विनोदिनीमहर्निशंपरश्रियःपरम्पदन्तदंगजत्विषाञ्चयः । ।१४ ।।

प्रचण्डवाडवानल प्रभाशुभप्रचारिणी महाष्टसिद्धि कामिनीजनावहूतजल्पना ।

विमुक्तवामलोचनाविवाहकालिक ध्वनिः शिवेतिमन्त्रभूषणाजगज्जयायजा यतम् ।। १५ ।।

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीत शम्भुपूजनमिदं पठति प्रदोषे ।

तस्यस्थिरां रथगजेन्दु तुरंगयेक्ता लक्ष्मी सदैवसुमुखीं प्रददाति शम्भुः

।। १६ ।।